वो सुबह कभी तो आएगी . . .

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

हिंदी फ़िल्म छोटी हो या बड़ी, संगीत उसका अहम् पक्ष होता है, इसलिए फ़िल्म में संगीतकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है.

कभी-कभी, रज़िया सुल्तान, फिर सुबह होगी, शंकर हुसैन, थोड़ी सी बेवफाई, उमराव जान, बाज़ार, नूरी जैसी संगीतमयी फिल्मों में अविस्मरणीय संगीत देने वाले 'मोहम्मद ज़हूर ख़ैय्याम हाशमी' (लोकप्रिय नाम 'ख़ैय्याम') हिंदी फ़िल्म संगीत के इतिहास में एक ऐसे संगीतकार के रूप में स्मरण किए जायेंगे, जिन्होंने सदा लोकप्रियता की होड़ से परे रहकर शास्त्रीय कलात्मकता को अपनाया. उनका संगीत तेज़-तर्रार प्रयोगों पर नहीं, बल्कि रागात्मक अनुशासन, शायरी की तहज़ीब और भावनात्मक ठहराव की नीव पर टिका है. उनकी धुनें कालजयी हैं और समय के साथ पुरानी नहीं पड़तीं, वो हिंदी फ़िल्म संगीत में उस परंपरा के संगीतकार हैं जहाँ गीतों क़ी धुनें शोर नहीं करतीं, बल्कि धीरे धीरे दिल में उतरती हैं और वहीं ठहर जाती हैं.

ख़ैय्याम साहब का जन्म पंजाब में हुआ. उन्होंने प्रसिद्ध संगीतकार जोड़ी हुस्नलाल भगत राम और पंडित अमरनाथ जैसे उस्तादों के सान्निध्य में शास्त्रीय संगीत की बारीकियाँ, रागों की संरचना और स्वर-शुद्धता आदि सीखे, इसीलिए उनकी बनाई धुनों में रागों का सुन्दर प्रयोग मिलता है, पर वे शास्त्रीय प्रदर्शन के लिये नहीं, भावनात्मक संप्रेषण के लिए राग का उपयोग करते हैं.

आरंभिक दिनों में वे सहायक संगीतकार के रूप में काम करते रहे; यहीं से फ़िल्मी संगीत की कार्य-प्रणाली और रिकॉर्डिंग की तकनीकी समझ विकसित हुई. शुरू के पांच साल ख़ैय्याम और उनके मित्र रहमान, 'शर्मा-वर्मा' क़ी जोड़ी के नाम से फिल्मों में संगीत देते रहे, बाद में फ़िल्म 'फुटपाथ' से उन्होंने पहली बार खैय्याम नाम से स्वतंत्र संगीतकार के तौर पर संगीत दिया, इस फ़िल्म का तलत महमूद का गाया गीत 'शामे गम क़ी कसम आज गमगीं हैं हम' काफ़ी मक़बूल हुआ था . ख़ैय्याम ने अपेक्षाकृत कम फ़िल्मों में संगीत दिया है, लेकिन हर फ़िल्म में उन्होंने अपनी अलग ही छाप छोड़ी. 'शोला और शबनम', 'आख़िरी ख़त', 'कभी-कभी', 'त्रिशूल', 'उमराव जान' और 'बाज़ार', 'रज़िया सुल्तान', 'थोड़ी सी बेवफाई', 'आहिस्ता आहिस्ता', जैसी फ़िल्मों के गीत उनकी कलात्मक प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं. इन फ़िल्मों में ख़ैय्याम का संगीत कहानी का सहायक बन जाता है, कहानी को आगे बढ़ाता हुआ, उसे अर्थ प्रदान करता हुआ. ख़ैय्याम की सबसे बड़ी पहचान है, कम में अधिक कहना. उनके संगीत में ऑर्केस्ट्रा सीमित पर अर्थपूर्ण रहता था, खासकर गज़लों में उन्होंने क्रूड आर्किस्ट्रा की जगह सितार, सारंगी, बांसुरी, तानपुरा आदि का सुन्दर प्रयोग किया है.

ख़ैय्याम उन गिने-चुने संगीतकारों में थे जो मानते थे कि अच्छा गीत पहले अच्छा साहित्य है. यही कारण है कि उनकी जुगलबंदियाँ महान शायरों के साथ बनीं. खासकर उन्होंने प्रसिद्ध गीतकार साहिर लुधियानवी के साथ बहुत उम्दा काम किया, 'फिर सुबह होगी', 'शगुन', 'कभी-कभी' और 'त्रिशूल' में साहिर-

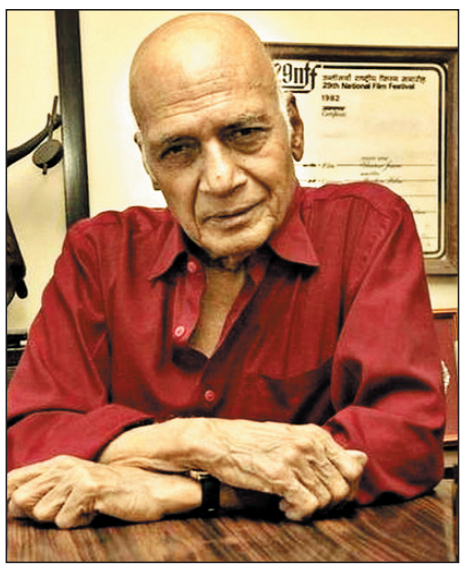

ख़ैय्याम की जुगलबंदी ने फ़िल्मी संगीत को नई ऊँचाई दी. 'वो सुबह कभी तो आएगी', 'फिर ना कीजे मेरी गुस्ताख निगाही का गिला', 'जिस प्यार में ये हाल हो', (फिर सुबह होगी), 'तुम अपना रंजो गम अपनी परेशानी मुझे दे दो (शगुन), 'कभी-कभी मेरे दिल में', 'मै पल दो पल का शायर हूं' (कभी कभी) और 'मुहब्बत बड़े काम क़ी चीज है' (त्रिशूल) जैसी रचनाएं सिर्फ़ गीत नहीं, एक शुद्ध भावनात्मक अनुभव है जहाँ धुन गीतों के अल्फाज़ की लय पकड़कर चलती है.

मशहूर शायर शहरयार के साथ फ़िल्म 'उमराव जान' के लिए रचा गया उनका संगीत फ़िल्मी इतिहास का मील का पत्थर माना जा सकता है, 'दिल चीज़ क्या है', 'इन आँखों की मस्ती के', 'ये क्या जगह है दोस्तों', 'जुस्तजू जिसकी थी' और 'काहे को ब्याही बिदेस' अमर रचनाएं हैं. इनमें ख़ैय्याम ने लखनऊ की नवाबी संस्कृति और वहां के संगीत की आत्मा को बड़ी संवेदनशीलता से नयेपन के साथ प्रस्तुत किया था. इसी प्रकार फ़िल्म 'बाज़ार' के सारे गीत मौसिकी में उनकी उम्दा कारीगरी क़ी मिसाल हैं.

ख़ैय्याम का फ़िल्मोग्राफ़ी संख्या में सीमित है, पर प्रभाव में जबरदस्त. उन्होंने लगभग 250 के करीब गीतों के लिये संगीत दिया उनके द्वारा सगीतबद्ध कुछ अविस्मरणीय गीत हैं, 'आप यूँ फासलों से गुज़रते रहे' और 'कहीं एक मासूम नाजुक सी लड़की' (शंकर हुसैन), 'ए दिले नादां' (रज़िया सुल्तान), 'जीत ही लेंगे बाज़ी हम तुम' (शोला और शबनम), 'तुम अपना रंजो गम अपनी परेशानी मुझे दे दो' (शगुन), 'आसमाँ पे है खुदा और ज़मीं पे हम', और 'चीनो अरब हमारा' (फिर सुबह होगी), 'दिखाई दिए यूँ कि बेखुद किया', 'फिर छिड़ी रात बात फूलों की', 'करोगे याद तो हर बात याद आएगी' (बाज़ार), 'आज बिछड़े हैं कल का डर भी नहीं' (थोड़ी सी बेवफाई) आदि .

व्यावसायिक सिनेमा की बदलते स्वरुप के बीच ख़ैय्याम के संगीत को कभी कभी 'धीमा' कहा गया. पर दरअसल ये धीमापन ही उनकी विशेषता है, उनकी ताक़त है, यह श्रोता को ठहरकर सुनने को बाध्य करता है. उनके गीत तत्काल तालियाँ नहीं बटोरते, बल्कि दीर्घकालिक स्मृति बन जाते हैं.

ख़ैय्याम ने यह साबित किया कि फ़िल्मी संगीत भी उच्च साहित्य और शास्त्रीय परंपरा से जुड़कर लोकप्रिय हो सकता है. आज जब संगीत तेज़ खपत की वस्तु बनता जा रहा है, उनका संगीत हमें याद दिलाता है कि ठहराव भी एक कला है, ख़ैय्याम का संगीत एक शांत नदी की तरह है, ऊपर से सरल, भीतर से गहरा. उनकी धुनों में शोर नहीं, संवेदना की स्पष्ट ध्वनि है. हिंदी फ़िल्म संगीत के इतिहास में उनका स्थान एक ऐसे साधक का है, जिसने सिर्फ सुरों को नहीं, भावों को भी साधा. ख़ैय्याम की संगीत-यात्रा की सबसे बड़ी पहचान है सादगी में गहराई. उनकी धुनों में रागों की खुशबू और शायरी की तहज़ीब मिलती है. वे संगीत को इतना पारदर्शी रखते थे कि गीतों के बोल चमक उठें. इसी कारण उनकी रचनाएँ आज भी शास्त्रीय अनुशासन और मानवीय संवेदना दोनों को साधे हुए प्रतीत होती है

ख़ैय्याम का संगीत हमें संगीत महसूस करने की फुरसत देता है. उनके सुरों में न तो व्यर्थ का दिखावा है, न ही अतिरंजना, है तो बस एक शालीन आत्मविश्वास और गहरी मानवीय संवेदना. हिंदी सिनेमा के आकाश में ख़ैय्याम साहब एक ऐसा सितारा हैं, जिनकी रोशनी समय के साथ और ज्यादा निखरती जाती है.

ख़ैय्याम को राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार और 'कभी कभी' और 'उमराव जान' फिल्मों के लिये फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार सहित अनेक सम्मानों से नवाज़ा गया. पर उनकी असली विरासत वे गीत हैं जो हमें भरपूर सुकून देते हैं. उन्होंने यह साबित कर दिया कि लोकप्रियता के लिए समझौते करना ज़रूरी नहीं .

आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक इस उम्मीद के साथ कि वो सुबह कभी तो आएगी, जब खैय्याम साहब की धुनों जैसी मधुर धुनों का युग फिर लोटेगा, खैय्याम साहब के मधुर संगीत को सुनें और आनंदित रहें, खुश रहें .

सारा अर्जुन ने प्रभास-विजय को पीछे छोड़ा

रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर' की सफलता ने अभिनेत्री सारा अर्जुन की लोकप्रियता में चार चांद लगा दिए हैं. ड्वस्ष्ठड्ड की हालिया लोकप्रिय भारतीय हस्तियों की सूची में सारा ने प्रभास, थलापति विजय और अगस्त्य नंदा जैसी बड़ी हस्तियों को पीछे छोड़कर पहला स्थान हासिल किया है. उनके साथ इस सूची में फिल्म के निर्देशक आदित्य धर भी दूसरे नंबर पर हैं.

रणवीर सिंह और सारा अर्जुन की फिल्म 'धुरंधर' रिलीज के एक महीने बाद भी बॉक्स ऑफिस पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए है. फिल्म ने न केवल दर्शकों का दिल जीता है, बल्कि फिल्म के कलाकारों की लोकप्रियता में भी इजाफा किया है. इस सफलता का सबसे बड़ा फायदा सारा अर्जुन को मिला, जिन्होंने अपने दमदार अभिनय और करिश्माई स्क्रीन प्रेजेंस के कारण ड्वस्ष्ठड्ड की लोकप्रिय भारतीय हस्तियों की साप्ताहिक सूची में शीर्ष स्थान हासिल किया. यह सूची दुनिया भर के लाखों फैंस के पेज व्यू और यूजर एंगेजमेंट के आधार पर तय की जाती है. इसमें सिर्फ अभिनेता ही नहीं बल्कि निर्देशक, लेखक, सिनेमैटोग्राफर और अन्य फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े प्रमुख नाम शामिल होते हैं. ड्वस्ष्ठड्ड ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर बताया कि इस सप्ताह की सूची में 2 करोड़ से अधिक फैंस की भागीदारी रही, जिन्होंने विभिन्न भारतीय सितारों के लिए वोट और पसंदगी दर्ज कराई. सारा अर्जुन पिछले हफ्ते दूसरे स्थान पर थीं, लेकिन 'धुरंधर' की लगातार बढ़ती लोकप्रियता और सोशल मीडिया पर उनकी सक्रियता ने उन्हें इस हफ्ते शीर्ष स्थान दिलाया. उनके पीछे इस सूची में दूसरे नंबर पर फिल्म के निर्देशक आदित्य धर रहे. सारा ने इस मामले में प्रभास, थलापति विजय और अगस्त्य नंदा जैसे बड़े स्टार्स को पीछे छोड़ दिया.

सूची में अन्य सितारों की स्थिति भी चर्चा के योग्य है. थलापति विजय आठवें स्थान पर रहे, जबकि अगस्त्य नंदा 12वें स्थान पर रहे. इसके अलावा, भाग्यश्री बोरसे 15वें, सिबी चक्रवर्ती 16वें, यामी गौतम 17वें और प्रभास 19वें स्थान पर दिखाई दिए. इसी तरह, श्रीराम राघवन 22वें, तारा सुतारिया 24वें, दिंजित अय्याथन 27वें, निविन 30वें और सिमर भाटिया 42वें स्थान पर रही.

सारा अर्जुन की यह सफलता इस बात का संकेत है कि युवा और नए चेहरे भी बड़े स्टार्स की प्रतिस्पर्धा में अपनी जगह बना सकते हैं. 'धुरंधर' में उनके किरदार को दर्शकों ने बेहद पसंद किया है.

अक्षय कुमार की 'भूत बंगला' मई में रिलीज

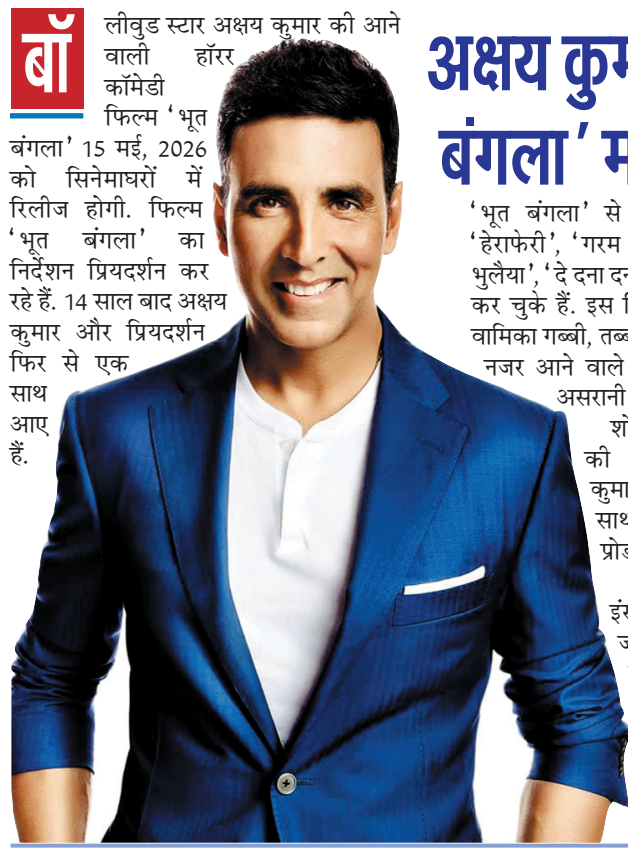

बॉलीवुड स्टार अक्षय कुमार की आने वाली हॉरर कॉमेडी फिल्म 'भूत बंगला' 15 मई, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी. फिल्म 'भूत बंगला' का निर्देशन प्रियदर्शन कर रहे हैं. 14 साल बाद अक्षय कुमार और प्रियदर्शन फिर से एक साथ आए हैं.

'भूत बंगला' से पहले अक्षय और प्रियदर्शन 'हेराफेरी', 'गरम मसाला', 'भागम भाग', 'भूल भुलैया', 'दे दना दन' और 'खट्टा मीठा' में साथ काम कर चुके हैं. इस फिल्म में अक्षय कुमार के साथ वामिका गब्बी, तब्बू और परेश रावल जैसे कलाकार नजर आने वाले हैं.फिल्म में दिवंगत अभिनेता असरानी भी नजर आएंगे.

शोभा कपूर और एकता आर कपूर की बालाजी टेलीफिल्म्स, अक्षय कुमार की केप ऑफ गुड फिल्म्स के साथ मिलकर, भूत बंगला को प्रोड्यूस कर रही हैं.

बालाजी मोशन पिक्चर्स ने इंस्टाग्राम पर इसका एक पोस्टर जारी किया है. इसमें अक्षय कुमार लालटेन लेकर एक टीले पर बैठे हैं. पोस्टर पर लिखा है 15-05-2026. इसके कैप्शन में लिखा है 'बंगले से एक खबर आई है. दरवाजे 15 मई 2026 को खुलेंगे.

'पुष्पा इम्पॉसिबल' में दर्दनाक मोड़

अभिनेत्री करुणा पांडे का कहना है कि सोनी सब के 'पुष्पा इम्पॉसिबल' के आने वाले एपिसोड में दर्शकों को उनके किरदार पुष्पा की यात्रा का सबसे दर्दनाक अध्याय देखने को मिलेगा. सोनी सब का शो 'पुष्पा इम्पॉसिबल' पुष्पा (करुणा पांडे) की प्रेरणादायक यात्रा के ज़रिए दर्शकों के दिलों को छू रहा है, जो एक साधारण महिला है लेकिन उसमें असाधारण हिम्मत है . एक समर्पित गृहिणी से लेकर एक दृढ़ वकील बनने तक, यह शो हर चुनौती के सामने उसके आगे बढ़ने की कहानी दिखाता है, क्योंकि वह ज़िंदगी की मुश्किलों से हार नहीं मानती और अपने विश्वासों और हिम्मत पर टिकी रहती है . आने वाले एपिसोड में, पुष्पा की बेटी राशि (अक्षया हिंदलकर) की शादी ऋषभ (श्रेय मारडिया) से बहुत ज़्यादा ड्रामे के बीच होती है . शादी से पहले, स्वरा (परी भट्टी) को शक होता है कि ऋषभ झूठे वादे करके राशि को गुमराह कर रहा है, जिसमें एक फ्लैट भी शामिल है जिसे खरीदने का उसका कभी इरादा नहीं था . जब उसकी चिंताओं को नज़रअंदाज़ किया जाता है, तो गुस्से में स्वरा तितली (भूमि रामोला) के साथ भागकर जेल में अपनी माँ कादंबरी (बृंदा त्रिवेदी) से मिलने जाती है, जिससे शादी के दौरान अफरा-तफरी मच जाती है . कादंबरी तितली को यह यकीन दिलाती है कि उसके पिता जुगल (अंशुल त्रिवेदी) की मौत के लिए पुष्पा ज़िम्मेदार थी, जिससे तितली घर छोड़कर वीरेंद्र (हेमंत खेर) के साथ रहने चली जाती है . पुष्पा एक दर्दनाक मोड़ पर खड़ी हो जाती है क्योंकि उसकी तीन बेटियाँ उससे दूर हो जाती हैं . शादी के बाद, राशि को अपनी शादी में दरारें दिखने लगती हैं क्योंकि ऋषभ उसे इमोशनली ब्लैकमेल करता रहता है .

आज भी दमदार है टेलीविज़न : अपरा मेहता

जानी मानी चरित्र अभिनेत्री अपरा मेहता का कहना है कि आज के दौर में भी टेलीविज़न प्रभावशाली और सशक्त माध्यम बना हुआ है .

अपरा मेहता इन दिनों सन नियो के शो 'प्रथाओं की ओढ़े चुनरी : बींदणी' में काम कर रही है . वह इस शो में राजश्री की भूमिका निभा रही हैं . उन्होंने कहा कि आज के दौर में भी टेलीविज़न प्रभावशाली और सशक्त माध्यम बना हुआ है . अपरा मेहता ने कहा, 'मैंने खुद टेलीविज़न को इन सालों में बदलते हुए देखा है और मुझे गर्व है कि मैं इस सफर का हिस्सा रही हूँ . जो भी शो अच्छा और सकारात्मक संदेश देता है, वह हमेशा दर्शकों को अपनी कहानी से जोड़ता है . टीवी पहले जैसा जरूर नहीं रहा, लेकिन यह खत्म होने वाला नहीं है . टीवी की पहुँच बहुत व्यापक है और इसके दर्शक आज भी बड़ी संख्या में हैं . यही वजह है कि टीवी आज भी बदलाव लाने और सही संदेश लोगों तक पहुँचाने का एक मजबूत माध्यम बना हुआ है .' अपरा मेहता ने कहा, 'मैं अपने ड्रामा के लिए दुनिया भर की सैर करती हूँ और मैंने देखा है कि विदेशों में रहने वाले लोग भारतीय टीवी से आज भी कितनी गहराई से जुड़े हैं . हो सकता है कि वे फिल्में नियमित रूप से न देखते हों, लेकिन टीवी जरूर देखते हैं . इसलिए हमारे लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि हम आज की सच्चाई को अपनी कहानी के जरिए दिखाएँ, न कि पुरानी सोच को . जैसा कि सन नियो के मेरे मौजूदा शो 'प्रथाओं की ओढ़े चुनरी : बींदणी' में मेरा किरदार मानता है कि लड़कियों को पढ़ने की जरूरत नहीं है .

श्वेता त्रिपाठी ने फिल्म 'पलकों पे' की शूटिंग पूरी की

अभिनेत्री श्वेता त्रिपाठी ने अपनी आने वाली फिल्म 'पलकों पे' की शूटिंग भोपाल में पूरी कर ली है.

फिल्म 'पलकों पे' की शूटिंग पिछले साल दिसंबर में शुरू हुई थी और भोपाल एवं उसके आसपास के कई लोकेशन्स पर लगातार और कड़ी शूटिंग शेड्यूल के साथ पूरी की गई, जिसने पूरी टीम को रचनात्मक और शारीरिक रूप से चुनौती दी.

'पलकों पे' में श्वेता त्रिपाठी के साथ अभिषेक चौहान और ईशान नक़वी अहम भूमिकाओं में नज़र आएंगे. इस फिल्म को विज्ञापन जगत के चर्चित फिल्ममेकर निधीश पूझक्कल ने लिखा और निर्देशित किया है.

यह फिल्म एक सामाजिक ड्रामा है, जो जेंडर समानता और मानसिक स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील विषयों को बहुत ही मानवीय और सच्चे अंदाज़ में दिखाती है. कहानी का केंद्र श्वेता द्वारा निभाया गया किरदार श्रद्धा अग्रवाल है.फिल्म का निर्माण राहुल गांधी की टैम्बू एंटरटेनमेंट और सलीम जावेद की ज़रिया एंटरटेनमेंट ने किया है.

श्वेता त्रिपाठी ने कहा, 'भोपाल में लगातार और मुश्किल शूटिंग शेड्यूल ने हम सभी को काफी थकाया, लेकिन इसी ने हमारी टीम के बीच एक खास जुड़ाव और ईमानदारी भी पैदा की, जो हमारे काम में दिखेगी. 'पलकों पे' की कहानी ने मुझे इसलिए आकर्षित किया क्योंकि यह तलाक, जेंडर समानता, यौन पहचान और मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों से बिना डरे सवाल पूछती है, जिन पर अक्सर चुपचाप या हल्के में बात की जाती है. निधीश इंसानी भावनाओं को बहुत गहराई से समझते हैं और हर सीन, हर खामोशी में वह संवेदनशीलता साफ नजर आती है. एक कलाकार के तौर पर ऐसी निर्देशन आपको और गहराई से काम करने का मौका देता है.'

श्वेता त्रिपाठी ने कहा, 'अभिषेक और ईशान के साथ काम करना भी बेहद खास अनुभव रहा. सभी ने पूरे दिल से काम किया, जिससे मुश्किल दिन भी सार्थक लगे. 'पलकों पे' की कहानी शूट खत्म होने के बाद भी मेरे साथ बनी रही है और मुझे उम्मीद है कि रिलीज़ के बाद यह दर्शकों के दिलों को भी छुएगी.

'आमी बार बार' से लौटा रेट्रो जादू

विंडोज़ प्रोडक्शन ने अपनी आगामी फिल्म भानुप्रिया भूतोर होटल से रोमांटिक रेट्रो गीत 'आमी बार बार' रिलीज़ कर दिया है. अरित्र मुखर्जी के निर्देशन में बनी इस फिल्म का यह गीत पुराने ज़माने की मोहब्बत की खूबसूरती को समेटे हुए है, जिसे आधुनिक सिनेमाई संवेदनाओं के साथ बेहद सलीके से पेश किया गया है.

गीत को अर्नब दत्ता ने लिखा और संगीतबद्ध किया है, जबकि इसे काजोल चटर्जी और स्वयं अर्नब दत्ता ने अपनी आवाज़ दी है. इस गीत को बॉनी सेनगुप्ता और स्वस्तिका दत्ता पर फिल्माया गया है, जहाँ दोनों क्लासिक रोमांटिक सिनेमा से प्रेरित रेट्रो अवतार में नज़र आते हैं. स्टाइलिंग, विजुअल्स और मूड गीत की भावना के साथ पूरी तरह मेल खाते हैं, जिससे 'आमी बार बार' फिल्म के सबसे यादगार म्यूज़िकल पलों में शामिल हो जाता है.

बॉनी सेनगुप्ता ने कहा, 'आमी बार बार सुनते ही मुझे इससे प्यार हो गया था. मैं चाहता था कि यह गाना मुझ पर फिल्माया जाए और खुशी है कि यह मेरे और स्वस्तिका दोनों पर फिल्माया गया. हमारा रेट्रो लुक हमारे लिए बिल्कुल नया था और सेट का माहौल बेहद शानदार रहा. रिलीज़ के बाद से जो प्रतिक्रिया मिल रही है, वह इस अनुभव को और भी खास बना देती है.' स्वस्तिका दत्ता ने कहा , 'आमी बार बार ऐसा गीत है, जिसे मैं सच में बार-बार सुन सकती हूँ.

प्रभास का तूफान : 'द राजा साब'

दक्षिण भारतीय फिल्मों के मेगास्टार प्रभास ऐसे इकलौते भारतीय अभिनेता बन गए हैं जिनकी लगातार तीन फिल्में सलार: पार्ट 1 - सीज़फायर, कल्कि 2898 एडी और द राजा साब नॉर्थ अमेरिका में एडवांस बुकिंग में एक मिलियन डॉलर से ज्यादा की कमाई कर चुकी हैं.

प्रभास की बहुप्रतीक्षित हॉरर-कॉमेडी फिल्म द राजा साब नौ जनवरी 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज़ होने जा रही है. यह अलग तरह की फिल्म बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ने और प्रभास की विरासत को और मजबूत करने के लिए तैयार है. यह उनकी जबरदस्त ग्लोबल लोकप्रियता को दिखाता है. हैदराबाद से लेकर हॉलीवुड तक फैंस तेजी से टिकट खरीद रहे हैं. फिल्म की रिलीज़ से पहले का क्रेज़ तब और बढ़ गया, जब एक बड़े डिस्ट्रीब्यूटर का लीक हुआ ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया. इस ऑडियो में डिस्ट्रीब्यूटर ने प्रभास की जमकर तारीफ की और कहा कि 'रिबेल स्टार' हर तरह की भूमिका में कमाल करते हैं. वे ऐसी कॉमेडी करते हैं कि

लोग हंस-हंसकर लोटपोट हो जाते हैं, हॉरर और डरावने सीन में रोंगटे खड़े कर देते हैं और दमदार एक्शन से हीरोइज़्म की नई मिसाल पेश करते हैं. इस लीक के बाद सोशल मीडिया पर जबरदस्त चर्चा शुरू हो गई है और बाहुबली स्टार की हैट्रिक को लेकर उम्मीदें और बढ़ गई हैं. प्रभास की मजबूत स्क्रीन प्रेज़ेंस के साथ यह फिल्म अब तक की उनकी सबसे अलग और बहुआयामी फिल्म मानी जा रही है, जो परिवार, थ्रिल पसंद करने वालों और एक्शन के शौकीनों सबको पसंद आएगी.

'टॉक्सिक' से यश की पहली झलक

किंग स्टार यश के जन्मदिन को यादगार बनाते हुए, टॉक्सिक: अ फेयरीटेल फॉर ग्रोन-अप्स के मेकर्स ने फिल्म का कैरेक्टर इंट्रो टीज़र रिलीज़ किया है.

इस ज़बरदस्त और बेबाक ऐलान के साथ यश के किरदार राय की आधिकारिक एंट्री होती है, जो पहले ही फ्रेम से ध्यान खींच लेती है.फैंस और फिल्म इंडस्ट्री के बीच भारी उत्सुकता के माहौल में रिलीज़ हुआ यह कैरेक्टर इंट्रो किसी जश्न की तरह नहीं, बल्कि एक एलान की तरह सामने आता है.

खास बात यह रही कि यश ने टॉक्सिक की दुनिया से सबसे पहले

इसकी महिलाओं को रूबरू कराया कियारा आडवाणी, नयनतारा, हुमा कुरैशी, रुक्मिणी वसंत और तारा सुतारिया. इस फैसले ने साफ कर दिया कि फिल्म की कहानी कई परतों वाली है और इसका विज़न सिर्फ हीरो तक सीमित नहीं, बल्कि दमदार किरदारों से बना है. खुद सामने आने से पहले महिलाओं को केंद्र में रखकर यश ने इशारा कर दिया कि टॉक्सिक तमाशे से नहीं, किरदारों की ताकत से खड़ी है.और अब, मंच तैयार होने के बाद, फिल्म की धुरी पर रोशनी पड़ती है, राय, जिसे यश निभा रहे हैं.

कब्रिस्तान की सिहरन भरी खामोशी के बीच अचानक मचता कोहराम. गोलियों की आवाज़ें सन्नाटे को चीरती हैं, लोग इधर-उधर गिरते हैं और धुएं के बीच से राय बाहर आता है. शांत, बेपरवाह और पूरी तरह कंट्रोल में. हाथ में टॉमी गन लिए वह पल को जल्दबाज़ी में नहीं जीता, वह उसे अपने नाम करता है.